दगडू परब का

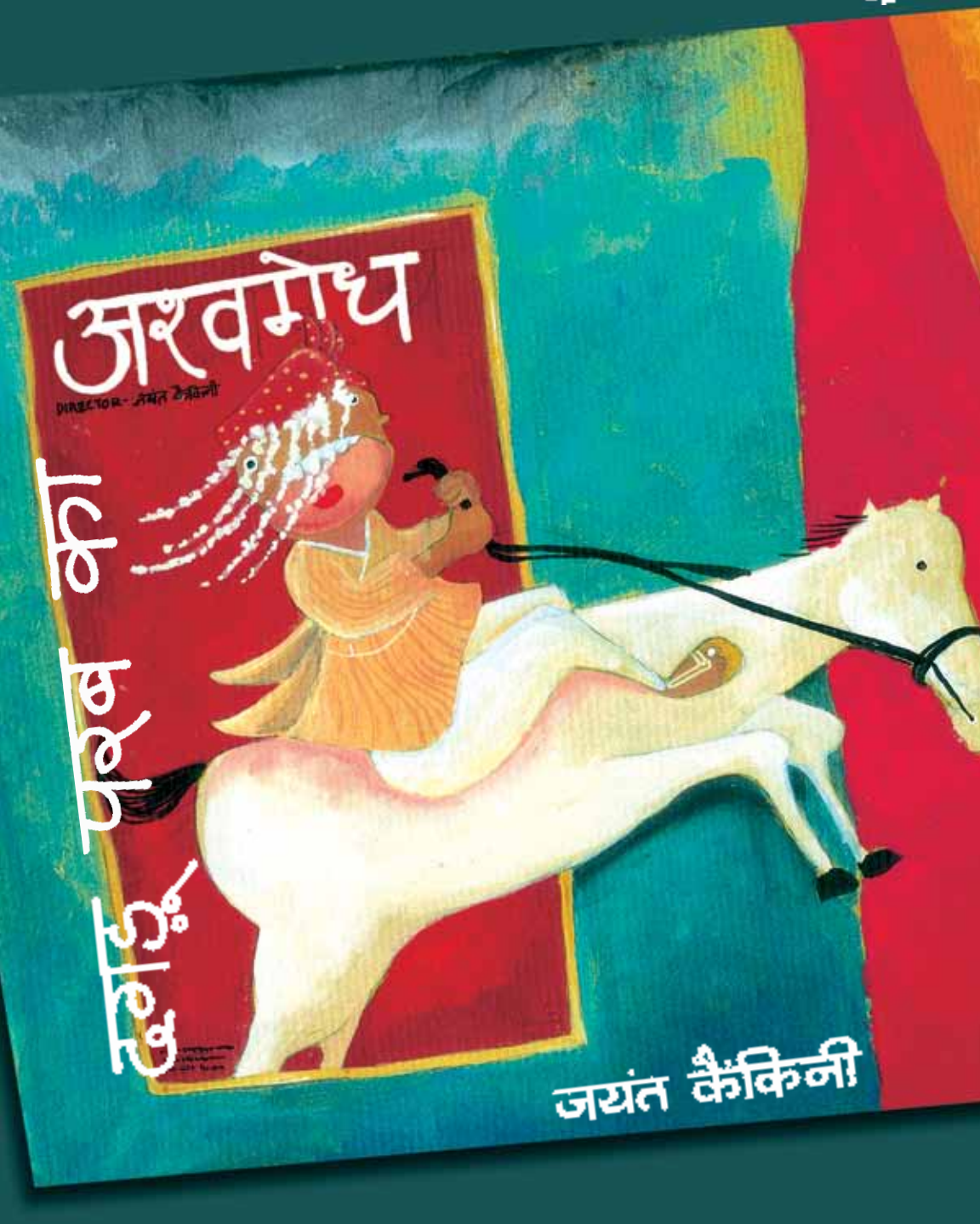

जयंत कैकिनी

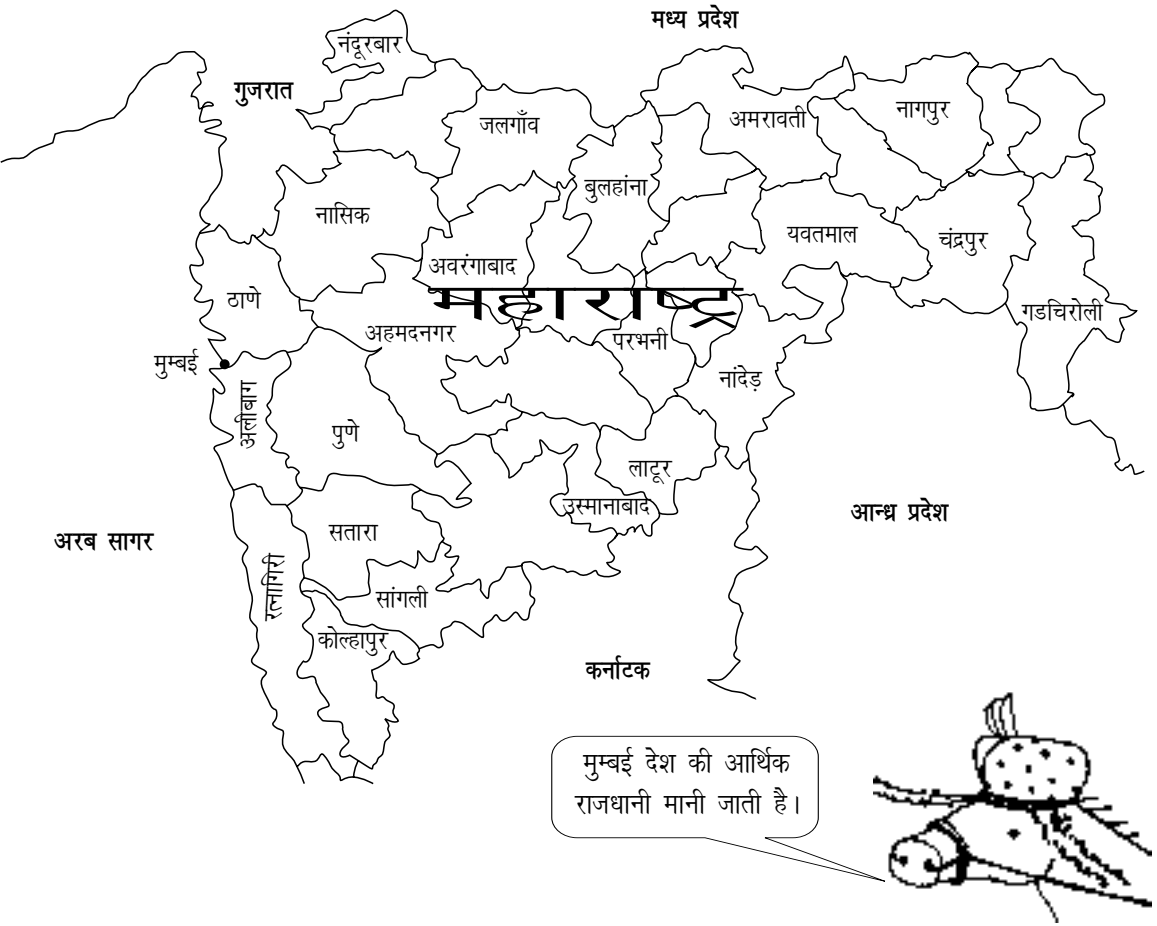

लेखक के बारे में

उनकी चार कथा कुसुमावलियों और तीन कविता संग्रहों के प्रकाशन के साथ, **जयंत कैंकिनी** का नाम कन्नड़ साहित्य के प्रसिद्ध नामों में स्थापित हो गया। उन्हें तीन बार कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कर्नाटक के तटीय नगर गोकर्ना में जन्मे जयंत ने जीव रसायन में एम. एस. सी की उपाधी प्राप्त की है।

दुगड्डू परब का अश्वमेध

जयंत कैंकिनी

की कन्नड़ कहानी पर आधारित
कथा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

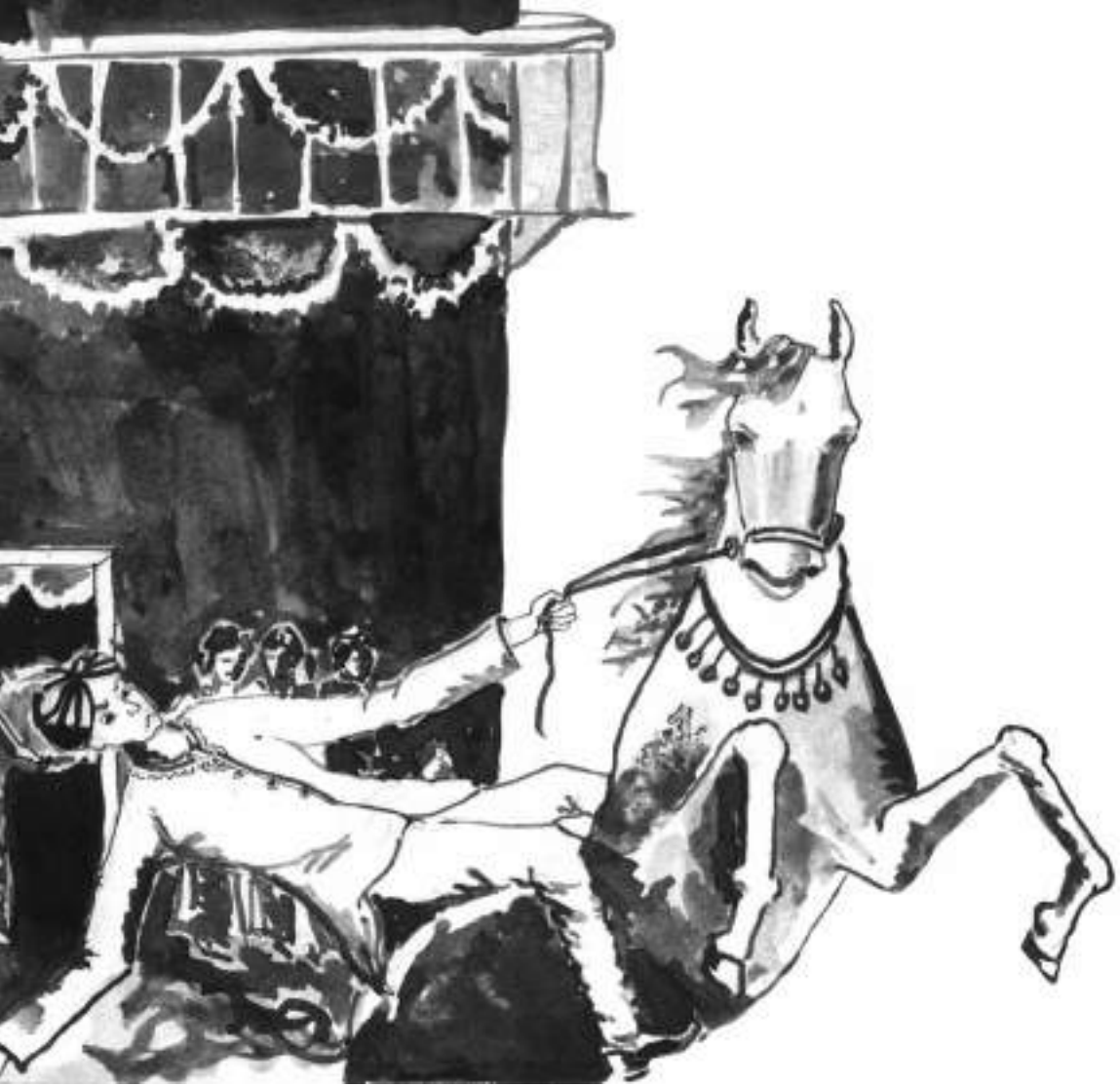

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
न्युटेक फोटोलिथेग्राफर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-87649-46-5
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

1

बारात धीर-धीरे लाल बहादुर शास्त्री रोड, मुलुण्ड की ओर मुड़ गई और बाज़ार रोड से स्टेशन की तरफ बढ़ने लगी।

बारात के आगे-आगे भड़कीले कपड़ों में सजे गुरुओं की तरह चल रहा था बैन्ड। उनके पीछे थे चमकीली मूछोंवाले युवक, और उनके पीछे अधेड़ उम्र के आदमी, टी-शर्ट तोंद पर कसी, इतराते और बीच-बीच में पीछे चलती हुई अपनी पत्नियों की ओर झाँकते हुए चल रहे थे। इन सबके पीछे थी मस्ती में नाचते लोगों की भीड़ और उन सभी के चेहरों पर गुलाल।

एकदम आख़िर में, जैसे रेलगाड़ी के पीछे सामान का डिब्बा, था औरतों का झुंड।

इस सब के बीच में सेहरा बाँधे हुए दूल्हा, हल्के भूरे रंग की घोड़ी पर सवार। सिर पर बँधी सुनहरी पगड़ी से लटकता चमेली का सेहरा उसके चेहरे को छिपाए था। पगड़ी से एक पंख गिरने को था।

बारात में किसी को भी दूल्हे राजा का नाम, दगड़ू परब, याद नहीं था।

लेकिन हर कोई उस आदमी को जानता था जो घोड़ी के आगे, कुछ दाईं ओर प्रधान की तरह चल रहा था। वह दूल्हे का बड़ा भाई, बालाचन्द्र परब था। उसकी ही राय से बारात में घोड़ी की लुभावनी झाँकी सजाई गई थी। उसने खुद दुल्हन के माता-पिता को इसके लिए राज़ी किया था, उसी ने भाग-दौड़ कर घोड़ी का इंतज़ाम किया था और अब अपनी ही देख-रेख में बारात को दुल्हन के घर लगे मंडप तक पहुँचा रहा था।

बारात अब शिवाजी रोड पर पहुँच गई थी। जैसे ही वे शिवाजी की मूर्ति के पास पहुँचे, पास के गैराज में किसी ने मोटर साइकिल स्टार्ट किया। वह गरजती हुई ज़ोर से चालू हो गई। पूरा बाज़ार उसकी गड़गड़ाहट से गूँज उठा और आस-पास के सभी लोग सकते में आ गए।

अचानक, घोड़ी ने अपनी आगे की टाँगें हवा में उठाई, ज़ोर से हिनहिनाई और दूल्हे समेत दौड़ चली बिजली की तरह। बेचारा दगडू! दूल्हे के मुँह से भी एक अजीब-सी चीख निकली ओर वो इधर से उधर लटकने लगा जैसे कि सोच रहा हो कि किस तरफ गिरे।

लोगो में भगदड़ मच गई! बाराती तितर-बितर हो गए और जो गली दिखी उसी में घुस गए।

बालाचन्द्र जैसे ही सम्भला, कुछ बड़बड़ाया और बाईं तरफ सब्ज़ी मंडी की ओर लपका।

वहाँ सब थैलों, रेज़गारी और सब्ज़ियों में उलझे लोगों से वह पूछता गया कि क्या किसी ने एक भगवा घोड़ी को देखा था। किसी ने कुछ नहीं देखा था। और बालाचन्द्र परब वापिस शिवाजी की मूर्ति की तरफ भागा जैसे उसे तभी कुछ याद आया हो।

"यहीं रुकना!" उसने औरतों और बैंड के बचे हुए लोगों से कहा। बालाचन्द्र की बीवी बाकी औरतों के साथ खी-खी करके हँसने लगी।

उसे पता था कि उसके पति ने इतना बड़ा आयोजन सिर्फ़ इसलिए किया है क्योंकि उसके पिता ने उनकी शादी में घोड़ी का इंतज़ाम नहीं किया था।

वह हँसती रही मगर चुप रही।

इधर बालाचन्द्र, "दगड़ू! ... दगड़ू!" चिल्लाता सब्ज़ी मंडी के अन्दर-बाहर भागता रहा।

जल्द ही वह गौशाला रोड पहुँच गया। मुश्किल यह थी कि वह घोड़ी को ढूँढे कहाँ? और यदि घोड़ी मिल भी जाए, तो क्या दगड़ू भी उसी पर होगा? या वह सिर्फ़ दगड़ू को ढूँढ़े और घोड़ी व सवार को नहीं?

मदद के उत्सुक लोग सड़क के दोनों ओर नालियों में झाँकने लगे। शायद दगड़ू वहाँ गिरा पड़ा हो।

तभी गौशाला रोड पर एक स्कूल की छुट्टी हुई। बालाचन्द्र बच्चों को रोककर पूछने लगा, "क्या तुमने इस सड़क पर कोई भागी हुई घोड़ी देखी है?"

लेकिन साथ ही उसे एक और सवाल परेशान कर रहा था। वह बदमाश गुलामा कहाँ है जो घोड़ी लाया था? कुछ सोचने के बाद बालाचन्द्र ने खुद को समझाया कि वह भी घोड़ी को ढूँढने निकला होगा। आखिर उसे ही तो घोड़ी की सबसे ज़्यादा फ़िक्र होनी चाहिए।

यह सब सोच बालाचन्द्र ने फिर सिर्फ़ अपने भाई को ढूँढने का निश्चय किया। उसने एक ऑटोरिक्शा किया और सड़क-सड़क गली-गली दगडू को ढूँढना शुरू किया। बीच-बीच में वह

रुक कर ध्यान से देखता। क्या वहाँ घोड़ी खड़ी थी? नहीं, सिर्फ़ टोकरियाँ थीं। और वहाँ? क्या उस सड़क के किनारे दगडू खड़ा था?

बालाचन्द्र का दिमाग घूम रहा था। जैसे ही ऑटोरिक्शा के मीटर में सोलह रुपए हुए, उसने ऑटो रुकवा दिया। उतरकर चारों ओर देखा। वह शहर के बाहर काफ़ी दूर निकल आया था। पास ही खेल का मैदान था।

और गुलामा? वह कहाँ था?

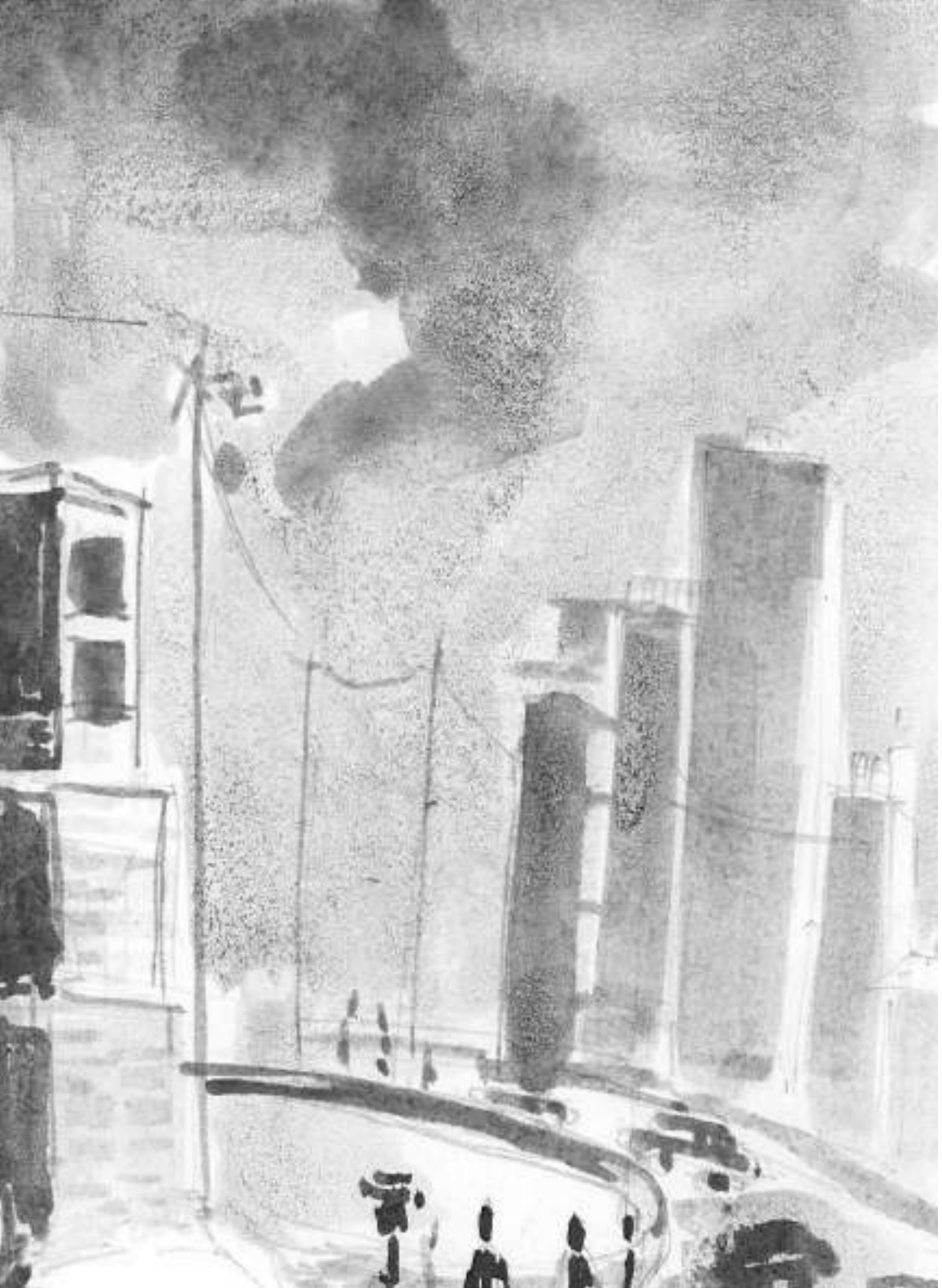

2

जैसे ही घोड़ी हिनहिनाई और भाग निकली, गुलामा रेलवे स्टेशन की ओर भागा और विक्टोरिया टर्मिनस के लिए ट्रेन पकड़ी। गुलामा घोड़ी लाया था। पर वह उसकी थी नहीं। वह भानुमती के पिता की घोड़ी थी - भानुमती, जिसे वह मन ही मन बहुत चाहता था।

गुलामा कलावा में एक पंसारी की दुकान पर काम करता था। एक दिन जब वह कुछ सामान बाँध रहा था, उसकी नज़र उस लड़की पर पड़ी जो गली के

पंसारीः किराने वाला

पार अस्तबल जैसे मकान में रहती थी। उसी पल, वह उसकी बाँहों का दीवाना हो गया।

वह मंत्रमुग्ध देखता रहा कैसे वह कपड़े सुखाने के लिए अपने हाथ फैलाती, कैसे वह बाँहे लटकाती, कैसे वह बगलें दिखाए बिना उन्हें उठाती। गुलामा एक ही पल में उसका गुलाम हो गया।

उसने पता लगाया कि लड़की के पिता केवल घोड़ों का व्यापार करते थे। पता चला कि बहुत वर्ष पहले वे ताँगेवाले हुआ करते थे।

अब उनके खुद के चार या पाँच ताँगे हैं। छुट्टियों में, जुहू बीच पर वे अपने घोड़े और घोड़ा-गाड़ियाँ भेजते थे, छोटे बच्चों को समुद्र किनारे घुड़सवारी करवाने के लिए।

उस अस्तबल जैसे घर में, जिसमें ताँगे, घोड़ों की लीद, चारा और चने के सिवा और कुछ न था, भानुमती ने भी गुलामा को देखा था। वह उसे देख कर खुशी से फूल जाती, मुस्कुराती, और फिर ग़ायब हो जाती। हंसिनी-सी वह आँखों ही आँखों में इशारे करती।

एक दिन न जाने क्या हुआ कि गुलामा उसके पिता के पास गया और खुल कर भानुमती का हाथ शादी के लिए माँग लिया।

भानुमती के पिता ने बदले में अपना हाथ दिया और इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि गुलामा शर्म से ही मर गया।

लेकिन गुलामा को दृढ़ विश्वास था कि सच्चे प्रेम की सदा जीत होती है, विश्वास जो उसे हिंदी फिल्मों से मिला था।

उसने सामान बाँधते वक्त भानुमती की गोरी बाँहों को देखना बंद नहीं किया। वह उसे प्रेम की रूठी नज़रों से देखा करता। उसने तो भानुमती को जलाने के लिए दुकान पर आनेवाली लड़कियों से छेड़-छाड़ भी करनी शुरू कर दी।

एक दिन, जब यह नाटक कुछ ज़्यादा ही हद पार कर गया, तो भानुमती ने उसकी तरफ देखना ही छोड़ दिया।

गुलामा ने अपना वक्त ठाणे के बस अड्डे पर खड़े ताँगेवालों के साथ बिताना शुरू कर दिया। वहीं हल्की-फुल्की बातचीत के बीच एक दिन उसने बालाचन्द्र परब को

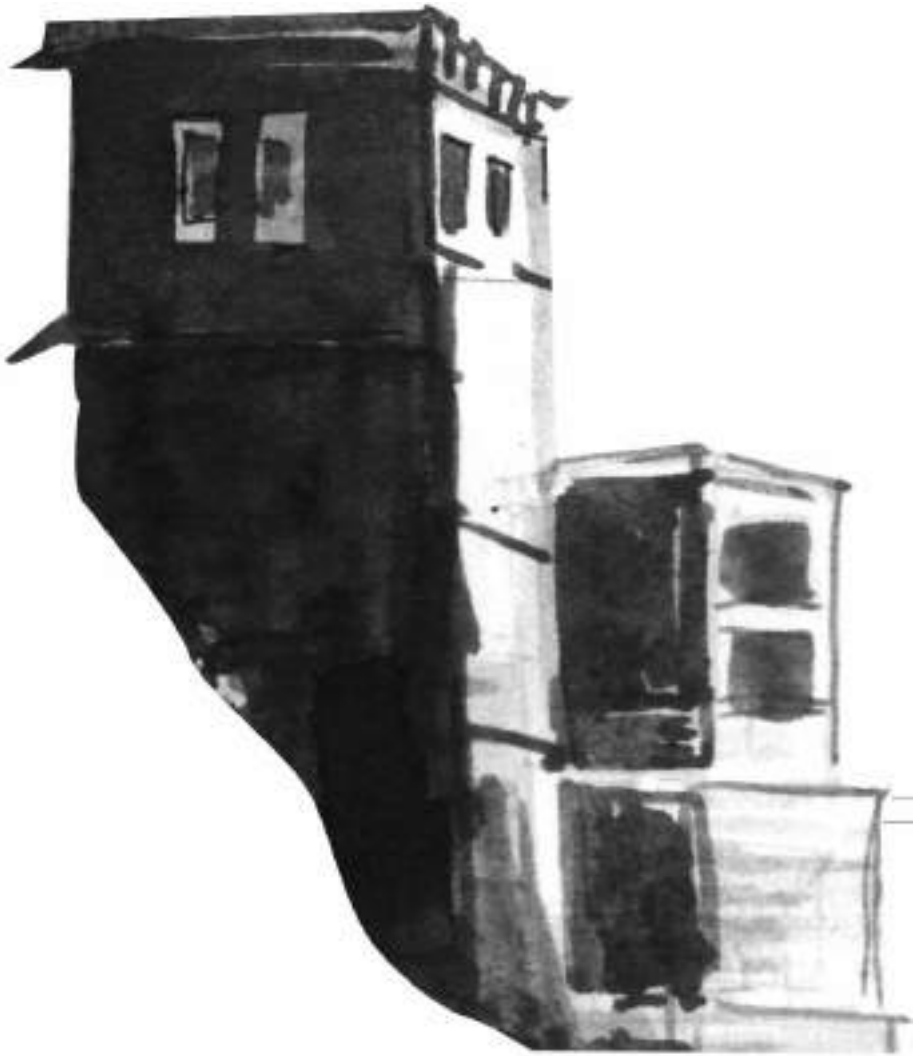

अपने भाई की शादी के लिए घोड़ी का मोल-भाव करते सुना। अचानक गुलामा एक झूठी बहादुरी से भर उठा।

"आप उतना दीजिए जितना आप दे सकते हैं। मैं सुबह-सुबह आपके लिए घोड़ी ले आऊँगा,""उसने बिना कुछ सोचे झट वादा किया। "लेकिन मैं उसे सजा-वजा नहीं सकता।"

अगले दिन गुलामा मुँह-अँधेरे उठा। उसने भानुमती के पिता के अस्तबल से एक घोड़ी खोली, उसे मुलुन्ड तक पैदल चलाकर लाया और बालाचन्द्र परब के दरवाज़े पर हाज़िर हो गया।

3

बालाचन्द्र के पड़ोसी घोड़ी को सजाने के लिए बाहर निकल आए, लेकिन बदमिज़ाज घोड़ी को देख सब वापस चले गए। अंत में हार मानकर सजे-धजे दूल्हे को स्टूल की मदद से घोड़ी पर चढ़ा दिया गया।

जब दगड़ू परब ने घोड़ी को देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे वह सीधी किसी फ़िल्मी पोस्टर से निकल, उसकी दहलीज़ पर आ खड़ी हुई हो। वह भूल गया कि वह दूल्हा है। उसे लगा कि घोड़ी सिर्फ़ सिर ही हिला दे तो उसकी तो जान निकल जाएगी।

मुँह-अँधेरेः सुबह जब सूरज नहीं उगा होता

जब तक बारात घर से निकली, उसके पसीने छूटने लगे। मन में अजीब विचार आने लगे। भला वही इस बड़े भाई का छोटा भाई क्यों पैदा हुआ? जैसे ही बैंड ने अपनी पहली धुन छेड़ी, घोड़ी हल्की-सी उछली और दगडू की पीठ में तेज़ झटका लगा। वह थोड़ा-सा खिसका कि दर्द कुछ कम हो। पर कुछ देर बाद जब घोड़ी ज़ोर से उछली तो दगडू की पीठ में फिर वही टीस उठी। और वो मन ही मन अपने इंसान जन्म को कोसने लगा। उसने ईर्ष्या से गुलामा को देखा जो बेफ़िक्र उसके साथ-साथ पैदल चल रहा था।

गुलामा चाहता था कि वह बारात से जल्द से जल्द पीछा छुड़ा ले। लेकिन बारात मतलब लड़कियाँ, जो शर्माते हुए बार-बार मेहमानों के पास आती और उन पर इत्र छिड़क जाती थीं। फिर बालाचन्द्र परब ने तो उसे एक गोल्ड स्पॉट भी लाकर दी थी।

जैसे ही वे शिवाजी की मूर्ति के पास पहुँचे, और गुलामा ने ठंडे की बोतल ख़त्म की, घोड़ी भाग निकली।

गुलामा भी ठीक उसी पल भाग निकला। उसने इधर देखा न उधर, बस नाक की सीध में स्टेशन की ओर भागा। आखिकार

टीसः दर्द

ट्रेन में ठीक-ठाक बैठने के बाद वह भानुमती और उसके पिता को कोसना नहीं भूला।

जब भानुमती का पिता सुबह आठ बजे उठा और उसे सब पता चला, तो वह आग-बबूला हो उठा। उसने अपने कुछ ताँगे कोलाबा के आस-पास के इलाके में घोड़ी को ढूंढ़ने के लिए भेजे। फिर पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट लिखाई। वहाँ उससे पूछा गया कि घोड़ी किस रंग की है। "घोड़े के रंग की, और कैसी?" उसने जवाब दिया।

उस दिन, भानुमती का दिल एक अलग ही खुशी और उल्लास से भरा था। वह नहाते-नहाते ऊँची आवाज़ में गाती रही।

इसी दौरान, कोई पिटते-पिटते बचा क्योंकि उसने भरी धूप में खेल के मैदान में चलते हुए बालाचन्द्र को देख उससे पूछ लिया, "तुम? यहाँ? पर आज तो तुम्हारे भाई की शादी थी न ..."

4

बालाचन्द्र चलता रहा और किस्मत को कोसता रहा। यदि घोड़ी और दगड़ू न भाग खड़े होते, तो इस वक्त शादी हो रही होती। उसने पुलिस थाने जाने के बारे में सोचा। लेकिन शादी के मंडप की लाइसेंस फीस, पुलिस को जो पैसे खिलाने पड़ते, यह सब सोच कर वह ढीला पड़ गया।

थोड़ी देर के लिए उसे शादी का मंडप, उसका घर, सब कुछ बहुत दूर नज़र आये। फिर अचानक उसके दिमाग में एक बात आई। कहीं दगड़ू वापस मंडप ही तो नहीं पहुँच गया?

अपने पैर घसीटते, वह लगभग दोपहर दो बजे मंडप पहुँचा। कई लोग भी इंतज़ार कर रहे थे। कुछ औरतें अपनी जगह बैठे-बैठे ही सो गई थीं। बैंडवाले, और उन्हें सुननेवाले, बत्तीसी निकाले, मुस्कानें बिखेरते, रसोईघर से आ-जा रहे थे।

अचानक करीब तीन बजे बालाचन्द्र उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "यह सब ईश्वर की इच्छा है। जो होना है, वही होगा," और फिर उसने भोजन परोसने का इशारा कर दिया।

भूखी भीड़ खाने पर टूट पड़ी। बालाचन्द्र की बीवी ने उसे एक जलेबी पकड़ा दी जो उसने बिना ध्यान दिए खा ली।

पर उसका दिल दुखा जब उसे बैंड के पूरे पैसे चुकाने पड़े, वह भी सिर्फ़ दो गाने बजाने के लिए। फिर भी उसने सबके सामने पूरे पैसे गिने और बैंड वालों का हिसाब चुका दिया।

फिर लाउडस्पीकरवाले जानना चाहते थे कि क्या उन्हें शाम तक रुकना पड़ेगा, और बालाचन्द्र चिल्लाया,"“जाओ अगर जाना चाहते हो!" और उसे जो पहली कुर्सी दिखी, वह उसी पर बैठ गया। जल्द ही वह ऊँघने लगा।

पर घोड़ी और दूल्हे राजा का क्या हुआ? घोड़ी कुछ समय के लिए एक सर्कस में रही थी। उसने कुछ महीने एक फ़िल्म की शूटिंग

में भी हिस्सा लिया था। उसके तर्जुबे क़तई मामूली नहीं थे।

जब वह मोटर साइकिल भड़भड़ाकर चालू हुई, न जाने उस घोड़ी के मन में सर्कस की कौन सी याद ताज़ा हो उठी। वह आपे से बाहर हो अपनी पिछली टांगों पर उठ खड़ी हुई थी और फिर तेज़ी से भाग निकली थी। सुबह से शुरू हुई तमाम बकवास और ऊलजलूल हरकतों के बाद अचानक वह कर्कश आवाज़ घोड़ी के बर्दाश्त के बाहर थी।

फुरती से दौड़ते हुए वह राजाजी रोड पहुँची, वहाँ से झावर रोड, और फिर गोशाला रोड की तरफ दौड़ी चली।

उसकी पीठ पर दगडू लॉकेट की तरह लटक रहा था। वह घोड़ी से इस कदर लिपटा था और अपनी आँखें इतनी कसकर बंद कर रखी थीं कि वह भूल ही गया कि वह अभी तक गिरा नहीं था। अरे, ये तो कमाल हो गया! दगडू एक अजीब-सी हँसी हँसा।

गौशाला रोड पर बने स्कूलों के बच्चों ने भीड़ लगा ली और "ऐ-ऐ!" करके चिल्लाने लगे। लेकिन इसका भी दगडू पर कोई असर नहीं हुआ।

उसकी पगड़ी भी गिर गई, लेकिन वह और घोड़ी दौड़ते गए, उन बच्चों को देखा तक नहीं जो उसकी पगड़ी उठाए घोड़ी के पीछे भाग रहे थे।

घोड़ी मुड़ी और सेंट पाएस के खुले खेल के मैदानों, गायों और कुछ क्रिकेट पिचों के बीच होती हुई, एक छोटी दीवार फांद, फिर आगरा रोड पर निकल पड़ी। वहाँ पैट्रोलपंप के छोटे-से अहाते के बीच से होते हुए, वह बड़ी गाड़ियों, ट्रकों और डबलडेकर बसों के बीच दौड़ने लगी।

लोग बसों से अपनी गर्दनें बाहर निकाल इस दूल्हे को देखने लगे जो अपना सेहरा खो चुका था।

घोड़ी उन सब गाड़ियों और शोरगुल के बीच थिरकने लगी।

ठीक उसी क्षण कुछ जादुई हुआ - दगडू घोड़ी से जैसे एक हो गया। उसने अजीब सा हल्कापन महसूस किया। मिल में उसकी नौकरी, उसके भाई का रौब झाड़ना, बाहर निकले दाँतों वाली दुल्हन और उसकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के तमाम बेकार कामों को जैसे उसने कस कर लात जमाई और घोड़ी की गर्दन को थामे रहा। उस एक पल को वह स्वयं शिवाजी था, रायगढ़ के किले पर चढ़ाई करता हुआ।

5

घोड़ी अब राजमार्ग पर दौड़ी चली जा रही थी। चुंगी नाका पीछे छोड़, लाल बत्तियों की परवाह किए बिना, एक ऐसी मंज़िल की ओर जिसे सिर्फ़ वही जानती थी।

वह ऐसे ही काफ़ी देर तक दौड़ती रही। फिर राजमार्ग छोड़, किन्हीं छोटी जानी पहचानी गलियों से होती हुई वह किसी कसबे के बाहर आ पहुँची। घोड़ी हाँफती हुई एक तंग गली में घुसी और आख़िरकार, एक अस्तबल जैसे घर के आँगन में आकर रुक गई।

उसके आने की आहट सुन, घर के अंदर से कुछ लोग भागकर बाहर आए। उन्होंने दगड़ू को नीचे

उतारा, जो अब तक पूरी तरह थककर लगामों से लटका हुआ था। उन्होंने उसके ज़रीदार बटन खोले, पंखे से हवा किया और उसे एक चारपाई पर लिटा दिया।

एक लड़की पानी का बर्तन लाई और दगडू की चकराई हुई आँखों के सामने आ खड़ी हुई। जब वह गटक-गटककर पानी पी रहा था, वह गुनगुनाती हुई ग़ायब हो गई।

बिना ज़्यादा सवाल-जवाब, दो ही मिनट में भानुमती के पिता ने इस बने-बनाए दूल्हे को अपना दामाद स्वीकार लिया, जो उसकी घोड़ी वापस लाया था।

कई महीनों बाद, कोई बालाचन्द्र परब

के पास समाचार लाया कि दगडू जुहू बीच पर समुद्र के किनारे बच्चों को एक सुंदर ताँगे में सवारी करा रहा था।

उसी शाम, बालाचन्द्र परब अपने बीवी-बच्चों समेत एक ट्रेन और दो बसें बदल, जुहू पहुँच गया।

लोगों का समुद्र! कितने ताँगे, ऊँट, बच्चे, गुब्बारे! बालाचन्द्र तब तक घूमता रहा जब तक उसके पैर दर्द न करने लगे। उसने अपनी बीवी और बच्चों के लिए चने खरीदे और फिर घूमने निकल गया। फिर वह थककर वापस आ गया। दगडू या उसके ताँगे का कोई नामोनिशान नहीं था।

उसकी पत्नी अपनी खुशी छिपाने की भरसक कोशिश करती रही, और धीमे से बोली, “क्या? तुम्हें वह नहीं मिला? अगर तुम उसे ढूंढ लेते, तो कम से कम हम उसे वह पैसा लौटाने को तो कह सकते थे जो हमने मडंप और शादी के भोज पर खर्च किए थे।”

“क्या बकवास कर रही है!” बालाचन्द्र गुस्से से उफन पड़ा। समुद्र की ओर देखती हुई उसकी आँखें भर आईं। “जो मैंने अपने भाई के लिए किया उतना तो कोई भी बड़ा भाई करता।”

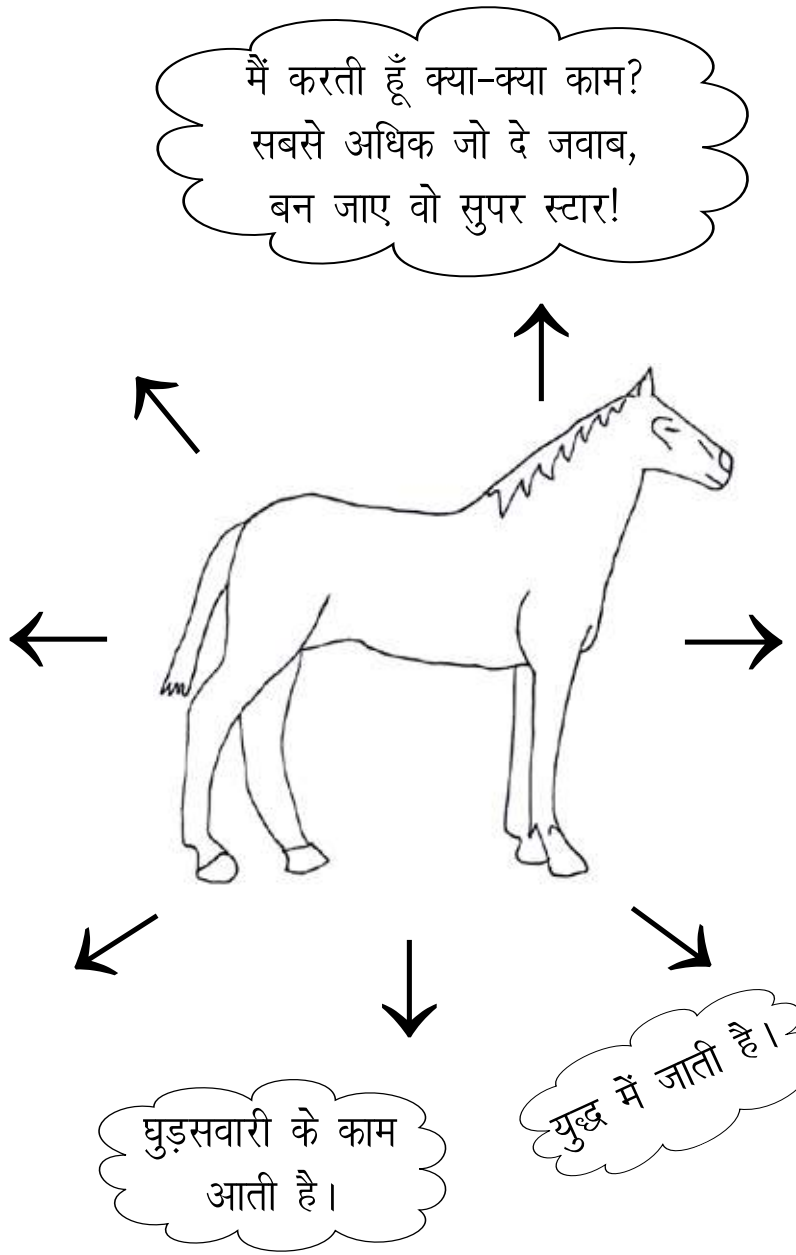

शहर में सड़कों की पहचान कैसे की जाती है?

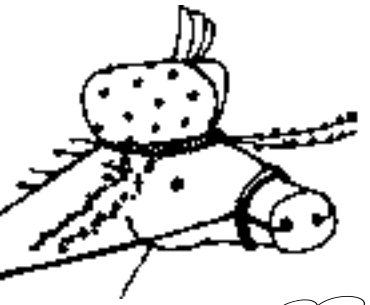

शब्द बनाएँ, वाक्य मिलाए।

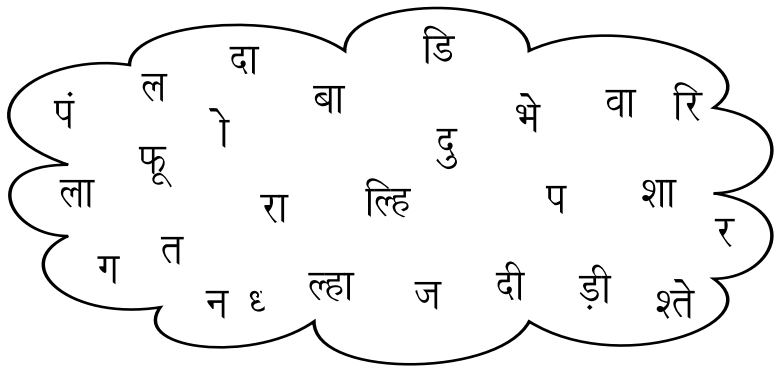

जितने शब्द बना सकते हो बनाओ। शब्द जोड़ वाक्य समझाओ।

(के) (ने) (मे) (और) (तथा) अपने पास से जोड़े।

शादी में और क्या-क्या होता है? किन-किन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है?

कथा कहती है कहानी?

घोड़े पर दूल्हा दगड़ू निकला था किसी और से शादी करने, पहुँच गया कहीं और। एक हँसती खिलखिलाती कहानी!

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

घोड़े पर दूल्हा दगडू निकला था किसी और से शादी करने, पहुँच गया कहीं और। एक हँसती खिलखिलाती कहानी!